पुराना नियम I

पुराना नियम I: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।
II. पेंटाट्यूक।

कक्षा #२:

III. उत्पत्ति की किताब:
   क. परिचय।
   ख. सृष्टि का इतिहास।
   ग. पतन, जलप्रलय, और बेबीलोन।
   घ. अब्राहम, इसहाक और याकूब।

कक्षा #३:

III. उत्पत्ति की किताब:
   क. अब्राहम, इसहाक और याकूब। (जारी।)
   ख. यूसुफ।
   ग. निष्कर्ष।

कक्षा #४:

IV. निर्गमन, गिनती, व्यवस्थाविवरण।

कक्षा #५:

V. लैव्यव्यवस्था।
   परीक्षा।

टिप्पणियाँ

पुराना नियम I: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) मिलाप के तम्बू के तीन भागों का उपयोग करके यह दिखाएं कि वह यीशु से कैसे संबंधित है और प्रत्येक भाग के कार्य और महत्व की व्याख्या करें (पृ. २५३)।

२) व्याख्या करें कि कैसे उत्पत्ति की पुस्तक में त्रिएकता की अवधारणा को बहुत पहले ही इंगित कर दिया गया है (पृ. २३९, २४०)।

३) उत्पत्ति ६:२ में "परमेश्वर के पुत्र" कौन हैं ("मनुष्यों की पुत्रियों" की पहचान, किया गया पाप, और आपके उत्तर के समर्थन की चर्चा को सम्मिलित करें) (पृ. २४१)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) पेंटाट्यूक की सात बिंदु की सामान्य रूपरेखा दें (पद्य आवश्यक नहीं)। (पृ. २३६, २३७)।

२) "राज्यों" और "शासकों" के अनुसार सृष्टि के दिनों की व्याख्या करें (पृ. २३८)।

३) उत्पत्ति १६ और २१ में पाई जाने वाली "शारीरिक वंशावली" के विचार को सारांशित करें (मुख्य पद्य और मुख्य धर्मविज्ञान विचार को सम्मिलित करें) (पृ. २४३)।

४) पहले जन्मे के ऊपर दूसरे जन्मे के परमेश्वर द्वारा संप्रभु चयन के पाँच मामलों के नाम बताएँ (पृ. २५०)।

५) उन तीन तरीकों का नाम बताइए जिनमें निर्गमन मसीह के जीवन की अंतिम घटनाओं के अनुरूप है (पृ. २५१)।

६) होमबलि की अवधारणा की व्याख्या करें (वह गद्यांश बताएँ जहाँ उसे समझाया गया है, बलिदान का अवसर या कारण, और उपयोग किए गए जानवर) (पृ. २५५)।

पुराना नियम I

टिप्पणियाँ

I. पाठ्यक्रम परिचय।

क. पुराने नियम (पु.नि.) पाठ्यक्रमों की श्रृंखला।

पुराने नियम (पु.नि.) पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

पाठ्यक्रम की एक संक्षिप्त श्रृंखला में पूरी रीती से अध्ययन करने के लिए पुराना नियम बहुत ही बड़ा है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संपूर्ण पु.नि. का अध्ययन करना हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य निम्न के माध्यम से पु.नि. का **सर्वेक्षण** करना है:

१) विभिन्न सामान्य अध्ययन जो वचन के बड़े भाग या एक सामान्य विषय को पूरा करते हैं।

२) कई विशिष्ट अध्ययन जो वचन के एक खंड या एक विशिष्ट शीर्षक या विषय पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

हम पु.नि. के लिए इसके उद्देश्यों और इसकी सामग्री की बेहतर समझ प्राप्त करके एक प्रशंसा विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पुराना नियम श्रृंखला को पुराने नियम के इब्रानी संस्करण (जिसे मासोरेटिक टेक्स्ट कहा जाता है) द्वारा परिभाषित तीन भागों के अनुसार तीन पाठ्यक्रमों में व्यवस्थित किया गया है:

पुराने नियम के तीन पाठ्यक्रम:

<u>पुराना नियम I:</u> व्यवस्था की पाँच किताबें (पेंटाट्यूक)। इसमें सम्मिलित हैं: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण।

<u>पुराना नियम II:</u> भविष्यद्वक्ताओं की २१ किताबें। इसमें "पहले के भविष्यद्वक्ता" सम्मिलित हैं: यहोशू, न्यायियों, १ और २ शमूएल, १ और २ राजा; "बाद के भविष्यद्वक्ता": यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, और "बारह (होशे - मलाकी)।

<u>पुराना नियम III:</u> लेखों की १३ किताबें। इसमें सम्मिलित हैं: भजन संहिता, नीतिवचन, अय्यूब, श्रेष्ठगीत, रूत, विलापगीत, सभोपदेशक, एस्तेर, दानिय्येल, एज्रा, नहेमायाह, १ और २ इतिहास।

टिप्पणियाँ

क. पु.नि. कैनन।

१. "कैनन" क्या है? वचन का कैनन उन पवित्र लेखों से बना है जिन्हें परमेश्वर के वचन के रूप में मान्यता प्राप्त है क्योंकि वे ईश्वरीय प्रेरणा और अधिकार के मानक के अनुरूप हैं।

२. पु.नि. का संगठन और विषय-सूची।

क. हम मासोरेटिक टेक्स्ट (इब्रानी संस्करण) के संगठन का उपयोग करेंगे, जिसे तानक कहा जाता है। तानक पु.नि. को तीन इब्रानी शब्दों के अनुसार तीन भागों में विभाजित करने का परिणाम है:

१) तोराह (ता) या व्यवस्था।

२) नवीम (न) या भविष्यद्वक्ता।

३) केथूबिम (के) या लेखन।

ख. निम्नलिखित आरेख विभाजन और उनकी विषय-सूची को दिखाता है।

व्यवस्था (तोराह)	भविष्यद्वक्ता (नवीम)		पहले	लेखन (केथूबिम)
उत्पत्ति	के भविष्यद्वक्ता:			कविता:
निर्गमन		यहोशू		भजन संहिता
लैव्यव्यवस्था		न्यायियों		नीतिवचन
गिनती		I और II शमूएल I		अय्यूब
व्यवस्थाविवरण		और II राजा		पात्र:
	बाद के भविष्यद्वक्ता:			श्रेष्ठगीत
	बड़े	छोटे		रूत
	यशायाह	होशे नहूम		विलापगीत
	यिर्मयाह	योएल हबक्कूक		सभोपदेशक
	यहेजकेल	आमोस सपन्याह		एस्तेर
		हाग्गै ओबद्याह		अन्य (इतिहास):
		योना जकर्याह मीका		दानिय्येल
		मलाकी		एज्रा
				नहेम्याह
				I इतिहास
				II इतिहास
५ किताबें		२१ किताबें		१३ किताबें

टिप्पणियाँ

ख. पुराने नियम का कालक्रम।

लेखक की टिप्पणी:

यद्यपि तिथियों के विषय में हठधर्मिता के साथ बोलना बहुत कठिन है, पुराने नियम में (पारंपरिक तिथियों के अनुसार) समय की अवधि का एक सामान्य परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने के लिए हम निम्नलिखित आरेख को सामने लाएँगे।

बाइबल के काल	मुख्य घटनाएँ	धर्मनिरपेक्ष काल
४००४-२२३४ ई.पू आरम्भ की अवधि	४००४ - पतन २३४८ - जलप्रलय २२३४ - बेबीलोन का गुम्मट	प्राच्य साम्राज्य???
२३४८-१७०६ ई.पू पितृसत्तात्मक काल	१९२१ - अब्राहम का बुलाया जाना १७६० - याकूब का एसाव से भागना १७१५ - यूसुफ मिस्र का राज्यपाल बना १७०६ - याकूब का परिवार मिस्र में प्रवेश	मिस्री साम्राज्य???
१७०६-१४५१ ई.पू. निर्गमन की अवधि	१६३५ - यूसुफ की मृत्यु १५७१ - मूसा का जन्म १४९१ - निर्गमन १४५२ - यहोशू को अगुवा नियुक्त किया गया १४५१ - यरदन को पार करना १४५१-१४४४ - कनान पर विजय	प्रारंभिक बाबुल साम्राज्य
१३९४-१०९५ ई.पू न्यायियों की अवधि	१३९४ – १३५४ -- ओत्निएल १२४९ – १२०९ -- गिदोन ११५७ – १११७ -- एली १११७ – १०९५ -- शमूएल	
१०९५-९७५ ई.पू. संयुक्त राज्य की अवधि	१०९५ – १०५५ -- शाऊल १०५५ – १०१५ -- दाऊद १०१५ - ९७५ -- सुलैमान १००४ - मंदिर का अभिषेक	११००-६२५ अश्शूर साम्राज्य
१०९५-९७५ ई.पू विभाजित राज्य की अवधि	इस्राएल / यहूदा ९७५--यारोबाम / ९७५--रहूबियाम ७३०-होशे से / ५९८—सिदकिय्याह ७२१--गुलामी में / ५८७--गुलामी में	९७०--सीरियाई साम्राज्य की स्थापना ७५३--रोम की स्थापना ६२५-५३६-- बाबुल साम्राज्य
५८७-४०० ई.पू मरणोत्तर अवधि	५३५--जरूबेल के तहत यहूदी लौटते हैं ५१६--मंदिर का अभिषेक ४५८-- और यहूदी एज्रा के तहत लौटते हैं ४४५-नहेमायाह यरूशलेम लौटते हैं और दीवारों की मरम्मत करते हैं	५३६--बाबुल पर कुस्रू द्वारा कब्जा ५३६-३३०-- फारसी साम्राज्य

टिप्पणियाँ

II. पेंटाट्यूक।

क. पेंटाट्यूक की विषय-सूची।

१. बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों को अक्सर व्यवस्था, तोराह, या पेंटाट्यूक (जिसका अर्थ है "पाँच स्क्रॉल") कहा जाता है।

२. मूसा की पाँच पुस्तकें (मर. १२:२६; लूका १६:२९; २४:२७, ४४; यूह. १:४५; ५:४६) में सम्मिलित हैं:

क. उत्पत्ति - इस पुस्तक में इतिहास की आरम्भ की घटनाएँ और आदरणीय वृद्ध पुरुषों (अब्राहम, इसहाक, याकूब और युसूफ) के जीवन सम्मिलित हैं।

ख. निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण।

१. इनमें पुराने नियम के लगभग २०% लेखन सम्मिलित हैं।

२. ये मूसा की ४० वर्ष की अगुआई को चित्रित करते हैं।

३. ये मिस्र (बंधुआई की भूमि) से लेकर कनान (वादे की भूमि) तक, इस्राएल के प्रति परमेश्वर के प्रकाशन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

४. ये चार पुस्तकें एक घटना के लिए समर्पित वचन के सबसे बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं। उस एक घटना को इस्राएल के एक राष्ट्र के रूप में छुटकारे और स्थापना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

ख. पेंटाट्यूक के भीतर की घटनाओं की रूपरेखा।

पेंटाट्यूक की रूपरेखा: निम्नलिखित सामान्य रूपरेखा पेंटाट्यूक की विषय-सूची के प्रवाह पर एक समग्र परिप्रेक्ष्य देती है:

१. सृष्टि का इतिहास (उत्प. १,२)।

२. पतन, जलप्रलय और बाबेल का गुम्मट (उत्प. ३-११)।

३. आदरणीय वृद्ध पुरुष: अब्राहम से यूसुफ तक (उत्प. १२-५०)।

४. इस्राएल का छुटकारा: मिस्र से सिनाई पर्वत तक (निर्ग. १-१९)।

५. सीनै पर्वत के निकट इस्राएल की छावनी (निर्ग. २० - गिन. १०)।

टिप्पणियाँ

६. जंगल में भटकना (गिन. १०-२१)।

७. मोआब के अराबा में इस्राएल की छावनी (गिन. २२ - व्यवस्था. ३४)।

ग. पेंटाट्यूक की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम।

लेखक की टिप्पणी:
प्रमुख घटनाओं और उनसे सम्बंधित पद्यों के कालानुक्रमिक प्रवाह के समग्र परिप्रेक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित आरेख (डॉ. जॉन री द्वारा) का प्रयोग करें।

वचन पद्य	वर्ष ई.पू.	घटना
उत्प. १ उत्प. २	? ?	६ सृष्टि के दिन आदम और हव्वा की सृष्टि/पाप में गिरना
उत्प. ६-९	?	नूह जलप्रलय
उत्प. ११:१-९ उत्प. ११:२७, २८	? २१६७	बेबीलोन का गुम्मट अब्राम का ऊर (निचला मेसोपोटामिया) में पैदा होना
उत्प. १२ उत्प. २१:१-७	२०९२ २०६७	अब्राम का कनान में आना/अब्राहम से वाचा इसहाक का जन्म
उत्प. २५:२१-२६	२००७	एसाव और याकूब का जन्म
उत्प. २८-२९ उत्प. ३०:२२-२३	१९३० १९१७	याकूब हरान भाग जाना यूसुफ का जन्म
उत्प. ३१-३३ उत्प. ३७ उत्प.४६	१९११ १९०० १८७७	याकूब अपने परिवार के साथ कनान लौट आए १७ वर्ष की आयु में यूसुफ व्यापारियों को बेच दिए गए याकूब अपने परिवार के साथ मिस्र चले गए
उत्प. ५०:२६ निर्ग. २:१-१०	१८०७ १५२७	युसूफ की ११० वर्ष की आयु में मृत्यु मूसा का जन्म
निर्ग. २:१५	१४८२	मूसा मिद्यान भाग गए
देखें १ राजा ६:१ गिन. १०-१४	१४४७ १४४६	मिस्र से निर्गमन/सीनै पर्वत पर एक वर्ष/मूसा से वाचा/मू+63+सा निर्ग. - लैव्य. - उत्प. लिखते हैं। कादेशबर्ने की ओर जाना/३८ वर्ष का भटकना
गिन. २०-२१ यहो. १-१२	१४०८ १४०७	यरदन की ओर जाना/मूसा गिन. - व्यव. लिखते हैं यहोशू की कनान पर विजय
न्यायियों १:१ - १ शमू. ८:३	१३८०-१०५ न्यायियों की अवधि (शमूएल सहित)	

टिप्पणियाँ

III. उत्पत्ति की किताब।

क. उत्पत्ति का परिचय।

१. किताब का मुख्य शब्द "आरम्भ" है। "उत्पत्ति" के लिए इब्रानी शब्द "बेरेशिथ" है, जिसका अर्थ है "आरम्भ"।

२. मुख्य विषय "छुटकारा" है।

क. छुटकारा एक "मुक्ति" है।

ख. हम उस छुटकारे या मुक्ति के दो भागों को उत्पत्ति १२:१-३ में देख सकते हैं:

१) मुक्ति **"आशीषित होना"** है।

२) उस मुक्ति के लिए चुकाई गई कीमत **"आशीष बनना"** है।

३. किताब को विभाजित करने के तरीके:

क. वाक्यांश "का वृत्तान्त" के अनुसार विभाजन (उदाहरण के लिए: उत्प. २:४; ५:१; ६:९)। उत्पत्ति को विभाजित करने का यह तरीका दस मुख्य भागों में परिणत होता है।

ख. जीवनी संबंधी विभाजन (इब्रा. ११ में महान "विश्वास में प्रसिद्ध" लोगों की सूची में आधे से अधिक लोग उत्पत्ति के ऐतिहासिक पात्र हैं)।

१) आदम से नूह तक (उत्प. १-११)।

२) अब्राहम से इसहाक तक (उत्प. ११:२७-२५:११)।

३) इसहाक से याकूब तक (उत्प. २५:१९-३५:२९)।

४) याकूब से यूसुफ तक (उत्प. ३६-५०)।

४. जब हम उत्पत्ति की किताब का अध्ययन करते हैं, तो हम ऊपर दिए गए पेंटाट्यूक की सामान्य रूपरेखा के उपयुक्त भागों का उपयोग करेंगे।

टिप्पणियाँ

ख. सृष्टि का इतिहास (उत्प. १-२)।

१. आरम्भ में पृथ्वी "निराकार और खाली" थी। परमेश्वर ने खालीपन, शून्यता, या टूट-फूट में से बनाया (उत्प. १:२)। जिस प्रकार परमेश्वर ने "खालीपन" से कुछ "अच्छा" बनाया (उत्प. १:४), वह हमारी कमजोरी और खालीपन (२ कुरिं १२:९) में से भी "अच्छा" (रोमियों ८:२८) बनाते हैं।

२. सृष्टि के दिन। सृष्टिकर्ता परमेश्वर पहले "साँचे" बनाते हैं और फिर उन्हें भरते हैं।

चर्चा विषय

चर्चा को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें। हम अपने जीवन में इस सिद्धांत को कैसे लागू कर सकते हैं कि सांचे बनते हैं और फिर भरे जाते हैं।

दिन	क्षेत्र (पहले बेडौल)	शासक (पहले अधूरे)	दिन
१	प्रकाश (पूर्व-सौर) पद्य ३-६	प्रकाशग्रह पद्य १४-१९	४
२	आकाश (विस्तार) पद्य ६-८	मछली/पक्षी पद्य २०-२३	५
३	समुद्र और भूमि पद्य ९-१३	पशु/आदमी पद्य २४-३१	६

ग. पतन, जलप्रलय, और बेबीलोन (उत्प. ३-११)।

१. निम्न के प्रारंभिक संकेत:

क. त्रिएकता।

१) परमेश्वर बहुवचन में बोलते हैं "आओ हम बनाएँ"। (देखें उत्प. १:२६ और उत्प. ११:७)।

२) "परमेश्वर" के लिए इब्रानी शब्द "एलोहीम" है (उत्प. १:३१ आदि)। इब्रानी शब्द बहुवचन में है, फिर भी इसे हमेशा एकवचन क्रिया में उपयोग किया जाता है।

क) यह त्रिएकता की अवधारणा के अनुरूप है। परमेश्वर बहुलता में है फिर भी एक है और अपनी बहुलता के भीतर सामंजस्य में कार्य करता है।

ख) इब्रानी में हम इसे "एकाद" और "याकिद" के बीच के अंतर के रूप में व्यक्त कर सकते हैं।

टिप्पणियाँ

(१) "याकिद" का अनुवाद "एक" के रूप में किया जाता है। इसका अर्थ एक गैर-विविध एकता के अर्थ में "एक" है।

(२) हालाँकि, "एकाद" शब्द व्यवस्थाविवरण ६:४ में उपयोग किया गया है, जब बाइबल कहती है कि परमेश्वर एक हैं। इस इब्रानी शब्द का अर्थ मिश्रित एकता के अर्थ में "एक" है।

(क) उदाहरण के लिए, पुरुष और पत्नी "एकाद" (एक) बन जाते हैं।

(ख) दिन और रात "एकाद" (एक) बन जाते हैं।

(ग) गिनती १३:२३ में हम अंगूरों के एक "एकाद" (एक गुच्छे) के विषय में पढ़ते हैं।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि त्रिएकता की प्रकृति हमें निम्नलिखित की प्रकृति को समझने में कैसे सहायता कर सकती है:

१) विवाह

२) मसीह की देह

ख. क्रूस में छुटकारा (उत्प. ३:१५)।

१) "शत्रुता" के लिए इब्रानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "खून का झगड़ा"। वास्तव में क्रूस पर यही हुआ होगा।

२) "बीज" शब्द एकवचन में है। यह यीशु के जन्म को संदर्भित करता है (ध्यान दें कि कैसे "उसके वंश" को "वह" और "उसे" कहा जाता है)। (देखें गला. ३:१६)।

क) "उसके वंश" का अर्थ है मरियम का वंश (एकवचन)।

ख) "वह/उसे" का अर्थ है यीशु।

ग) "सिर" का अर्थ है विनाश।

घ) "एड़ी" का अर्थ है क्रूस।

टिप्पणियाँ

२. एक सामान्य और कठिन प्रश्न है: उत्पत्ति ६:२ में "परमेश्वर के पुत्र" कौन हैं?

चर्चा विषय

चर्चा को बढ़ावा देने और "परमेश्वर के पुत्रों" की विभिन्न व्याख्याओं को प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें।

विषय	शिक्षा #1	शिक्षा #२	शिक्षा #३	शिक्षा #४
परमेश्वर के पुत्र	गिरे हुए स्वर्गदूत	शेत के ईश्वरीय वंशज	वंशवादी शासक	श्रेष्ठ पुरुष (शारीरिक और बौद्धिक रूप से, आदि)
मनुष्य की पुत्रियाँ	मानव महिलाएँ	कैन की वंशज	आम महिलाएँ	श्रेष्ठ महिलाएँ (शारीरिक और बौद्धिक रूप से, आदि)
पाप	अलौकिक और मानव के बीच विवाह	पवित्र और अपवित्र के बीच विवाह	बहुविवाह	एक श्रेष्ठ प्राणी बनाने के प्रयास में रणनीतिक संभोग (इस पाप की भावना बेबीलोन के गुम्मट वाले पाप के समान होगी)
समर्थन	** वाक्यांश "परमेश्वर के पुत्र" हमेशा स्वर्गदूतों को संदर्भित करता है (अय्यू. १:६; ३८:७; भज. २९:१; ८९:७) ** यहूदा ६, ७ संभवतः इस पाप का उल्लेख कर सकता है।	**यह पहले के संदर्भ में बना रहेगा **यह पेंटाट्यूक के बाकी भागों में एक सामान्य विषय या समस्या बना रहेगा	** शासकों को अक्सर परमेश्वर कहा गया है (निर्ग. २१:७; २२:८, ९, २८; भज. ८२:१, ६)	** श्रेष्ठ वाला विचार संभव है (परमेश्वर के पुत्र और सुंदर पुत्रियाँ) ** प्राकृतिक आनुवंशिक इंजीनियरिंग ने जलप्रलय को जन्म दिया। आधुनिक वैज्ञानिक इंजीनियरिंग किस ओर ले जाएगी?

टिप्पणियाँ

घ. अब्राहम, इसहाक और याकूब (उत्पत्ति १२-३६)।

१. आशीषें।

क. उत्प. १२:१-३ का अध्ययन करें।

१) यहाँ हम छुटकारे की योजना के दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दे सकते हैं।

क) यह एक वाचा या एक वादे पर बनाया गया है।

ख) इसके दोहरे उद्देश्य हैं।

(१) मैं तुझे आशीष दूँगा।

(२) तू दूसरों को आशीष देगा।

२) यहाँ हम देखते हैं कि छुटकारे की रणनीति में लोगों को चुनना है और उनके माध्यम से अन्य लोगों तक पहुँचने के लिए काम करना है (लोगों को आशीष देना और अन्य लोगों को आशीष देने के लिए उनका उपयोग करना)।

ख. मुख्य पद्य उत्पत्ति १२:४ है। पद्य का प्रमुख विषय आज्ञाकारिता है।

१) कौन? --- अब्राहम।

२) क्या? --- वह आगे बढ़ गए।

३) क्यों? --- क्योंकि प्रभु ने उनसे कहा था।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार "वाचा" है।

२. भाईचारा।

क. उत्पत्ति १३:८, ९ का अध्ययन करें।

१) अगुवे संघर्ष से बच सकते हैं, भले ही उनके अनुयायी इससे बचना न चाहते हों (पद्य ७, ८)।

२) विनाशकारी संघर्ष से बचने के लिए, अगुवों में से एक को विनम्रता और निस्वार्थता का प्रदर्शन करना चाहिए (पद्य ९)।

टिप्पणियाँ

ख. मुख्य पद्य उत्पत्ति १३:९ है। अब्राम ने नम्रता और निस्वार्थ भाव से चुनाव या सम्मान लूत को दिया।

ग. प्रमुख धर्मवैज्ञानिक विषय एकता, भाईचारा और निस्वार्थता हैं।

३. प्रतिज्ञा।

क. उत्प. १५ और १८ का अध्ययन करें। प्रतिज्ञा तत्काल या भविष्य और एकवचन या बहुवचन है।

१) उत्प. १५:४ में, "एक पुत्र" के लिए प्रतिज्ञा है। यह तत्काल और एकवचन है।

२) उत्प. १५:५, १८ में "वंशजों की भीड़" के लिए प्रतिज्ञा है। यह भविष्य और बहुवचन है।

ख. मुख्य पद्य उत्प. १५:६ है। विश्वास को धार्मिकता के रूप में गिना गया है।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विषय विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना है (गला. ३:६), और यह कि परमेश्वर का न्याय उनके वादों के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता से परिभाषित होता है (रोमि. ९ का अध्ययन करें)।

४. शारीरिक वंशावली।

क. उत्प. १६ और २१:९-२१ का अध्ययन करें।

१) शारीरिक वंशजों का जन्म शारीरिक उद्देश्यों (विश्वास की कमी; आत्मनिर्भरता) से हुआ है।

२) परमेश्वर की शारीरिक वंशावली पर दया है (देखें उत्पत्ति १६:७-१०)।

ख. मुख्य पद्य उत्प. १६:११ है। परमेश्वर सुनता है (इश्माएल को) और प्रत्युत्तर देता है।

ग. प्रमुख धर्मवैज्ञानिक विषय सामान्य अनुग्रह, परमेश्वर का सभी लोगों के लिए हृदय, और चुनी हुई वंशावली हैं।

टिप्पणियाँ

५. शर्तीय वाचा।

क. उत्प. १७ का अध्ययन करें।

१) वाचा में परमेश्वर का भाग:

क) अब्राहम राष्ट्रों का पिता होगा (वाचा का जारी रहना)।

ख) अब्राहम को भूमि प्राप्त होगी।

२) वाचा में अब्राहम का भाग: खतना (आज्ञाकारिता, निष्ठा, प्रतिबद्धता और समर्पण का प्रतीक)।

ख. मुख्य पद्य उत्प. १७:१० है। यहाँ वाचा के विचार को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार वाचा का विचार है।

६. परमेश्वर उद्धार का दाता।

क. उत्प. २२ का अध्ययन करें।

१) इसहाक यीशु का एक प्ररूप (पूर्वाभास या उदाहरण जो भविष्यवाणी करता है) है और अब्राहम पिता का एक प्ररूप है।

क) उत्प. २२:२ की यूह ३:१६ से तुलना करें।

ख) विद्वानों का मानना है कि मोरिय्याह की भूमि उसी स्थान पर थी जहाँ गोलगोथा थी।

ग) उत्प. २२:६ की तुलना यीशु द्वारा लिए गए मार्ग से करें जब वह अपनी स्वयं की क्रूस को गोलगोथा (डे ला रोजा से होते हुए) तक ले गया था।

घ) उत्प. २२:७ की तुलना गतसमनी बाग़ में यीशु और पिता के बीच की बातचीत से करें।

ङ) उत्प. २२:१० की तुलना यहे. ५३:६ के साथ करें।

च) उत्प. २२:१४ को गोलगोथा पर क्रूस की भविष्यवाणी के रूप में देखें (स्मरण रखें कि प्रभु का पहाड़ या गोलगोथा संभवत: मोरिय्याह के समान है)।

टिप्पणियाँ

२) परमेश्वर उद्धार देने वाले हैं। (देखें उत्प. २२:८, १३, १४)। ध्यान दें कि कैसे "परमेश्वर का मेमना" एक प्रतिस्थापन बन गए।

ख. मुख्य पद्य उत्प. २२:१४ है। यहाँ हम उद्धार में परमेश्वर के प्रावधान पर जोर देखते हैं।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार उद्धार का विचार है।

७. परमेश्वर की संप्रभुता।

क. उत्प. २५ और २७ का अध्ययन करें।

१) परमेश्वर की सर्वोच्च पसंद के अनुसार दो राष्ट्र होंगे। (देखें मला. १:१-५ और रोमि. ९)।

२) परमेश्वर अपनी संप्रभुता के अनुसार आशीष देंगे। यद्यपि याकूब आशीष को चुराते हुए दिखाई दिए, उन्होंने एहसास हुआ कि आशीष को मनुष्य द्वारा चुराया नहीं जा सकता, बल्कि परमेश्वर द्वारा दी जानी चाहिए (देखें उत्पत्ति ३२:२६)। .

ख. मुख्य पद्य उत्प. २५:२३ है। यहां हम दो राष्ट्रों या दो लोगों के मूलभूत विचार को देखते हैं।

ग. प्रमुख धर्मवैज्ञानिक विचार परमेश्वर के चुने हुए लोगों के हैं और परमेश्वर की संप्रभुता उस चुनाव में है।

८. प्रतिज्ञा जारी है।

क. उत्प. २८ का अध्ययन करें।

१) प्रतिज्ञा अभी के लिए है। वाचा दोहराई जाती है। उत्प. १२:१-३ और १७:१-८ की तुलना २८:१३, १४ से करें।

२) प्रतिज्ञा आगे दिखाती है। मत्ती २८:१९, २० की तुलना उत्प. २८:१४, १५ से करें ("जगत के" ; "तुम्हारे संग हूँ")।

ख. मुख्य पद्य उत्प. २८:१५ है। यहाँ हम वादे के केंद्रीय विचार को देखते हैं।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार परमेश्वर की उसके वादों और "महान आज्ञा" के प्रति विश्वासयोग्यता है।

टिप्पणियाँ

९. मनुष्य को तोड़ना और बनाना।

क. उत्प. ३२ का अध्ययन करें।

१) याकूब परमेश्वर के द्वारा तोड़े गए (ताकि उनका उपयोग किया जा सके)।

क) पहले याकूब ने एसाव के साथ संघर्ष किया। फिर उनका संघर्ष लाबान से हुआ। फिर दोबारा उनका संघर्ष एसाव से हुआ।

ख) फिर, उनका संघर्ष स्वयं परमेश्वर के साथ हुआ (देखें होशे १२:३-५)।

२) याकूब परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं।

क) उन्होंने मान लिया कि आशीष परमेश्वर से आनी चाहिए। फिर परमेश्वर ने उनका नाम बदल दिया।

ख) इसे नए जन्म के अनुरूप देखा जा सकता है (२ कुरिं. ५:१७ और मत्ती ११:१२ देखें)।

ख. मुख्य पद्य उत्प. ३२:२८ है। यहाँ हम जीवन परिवर्तन और बदले हुए नाम को देखते हैं।

ग. मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार यह है कि परमेश्वर अपने बनाने और तोड़ने में संप्रभु हैं।

ङ. यूसुफ (उत्प. ३७-५०)।

१. यूसुफ के जीवन में आदर के लिए सात चरण।

क. ईश्वरीय प्रभाव (अध्ययन करें उत्प. ३९:१-४)।

१) उसके संबंध में कि उनके साथ क्या हुआ (पद्य १)।

२) उनके जीवन में सफलता के संबंध में (पद्य २)।

३) उसके संबंध में कि अन्य लोगों ने उनके जीवन को कैसे देखा (पद्य ३)।

ख. व्यापार सत्यनिष्ठा और ईमानदारी (अध्ययन उत्प. ३९:५,६)।

१) दूसरों को आशीष देने के संबंध में (पद्य ५)।

२) अर्जित जिम्मेदारी के संबंध में (पद्य ६६)।

टिप्पणियाँ

ग. परीक्षा का प्रतिरोध (अध्ययन करें उत्प. ३९:७-१२)।

१) घमंड और वासना के संबंध में (पद्य ७, ८)। ध्यान दें कि ईमानदारी जिम्मेदारी को स्वीकार करने और उसके प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित है (पद्य ८, ९)। यह भी ध्यान दें कि कैसे पद्य ९ की बात उत्प. २:१६, १७ में जो हुआ, उसके व्यावहारिक छुटकारे का प्रतिनिधित्व करती है।

क) परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष को छोड़कर किसी भी अन्य पेड़ से नहीं रोका। आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया जब उन्होंने उस एकमात्र पेड़ से फल लिया जिसे मना किया गया था।

ख) पोतीपर ने यूसुफ से अपनी पत्नी के अलावा कुछ भी नहीं रख छोड़ा। यूसुफ ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया क्योंकि उन्होंने उस वर्जित चीज़ को पाने की परीक्षा का विरोध किया।

२) दृढ़ और अविरूद्ध होने के संबंध में (पद्य १०)।

३) परीक्षा से भागने के संबंध में (पद्य १२)।

घ. ईश्वरीय पक्ष (अध्ययन करे उत्प. ३९:२१-२३)।

१) दूसरों की दृष्टि में उन्हें पक्ष देने के सम्बन्ध में (पद्य २१)।

२) जिम्मेदारी और अधिकार पाने के संबंध में। ध्यान दें कि यूसुफ के पहले से पाए गए अनुभव के कारण वे कैसे उपयोग किए जाने के लिए सक्षम थे (पद्य २२, २३)।

ङ. संप्रभु परिस्थितियाँ (अध्ययन करें उत्प. ४०:१-१५)।

१) उसके संबंध में जिसे दुनिया "संयोग" कहती है (पद्य ३)।

२) उन स्थितियों के संबंध में जो दुनिया को असहाय महसूस कराती हैं (पद्य ८)। ध्यान दें कि कैसे फिरौन के पास ऐसी स्थिति में परमेश्वर की संप्रभुता को पहचानने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था (४१:१४)।

टिप्पणियाँ

लेखक का उदहारण:

इस प्रकार की परिस्थितियाँ परमेश्वर के लोगों के लिए महान अवसर हैं। जब संसार के उत्तर समाप्त हो जाते हैं तो वह परमेश्वर की ओर मुड़ने को इच्छुक हो सकता है। उदाहरण के लिए, दुनिया के पास एड्स का कोई उत्तर नहीं है। यहाँ परमेश्वर के लोगों के लिए एक अवसर है। परमेश्वर एड्स को ठीक कर सकते हैं, भले ही मनुष्य के पास इसका इलाज न हो।

अपना उदहारण लिखें:

च. परमेश्वर का आदर करना (अध्ययन करें उत्प. ४१:१६)। स्वयं से हटना और परमेश्वर की ओर इंगित करने के संबंध में (पद्य १६)।

छ. अलौकिक प्रकाशन (अध्ययन करें उत्प. ४१:२५-४५)।

१) सत्य, समझ और दिशा के संबंध में (पद्य २५-३६)।

२) वह बुद्धि होने के संबंध में जो दुनिया चाहती है और जिसकी उसे आवश्यकता है (पद्य ३८,३९)। परमेश्वर के लोगों का सभी लोगों हेतु निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि उनके पास परमेश्वर की बुद्धि है (पद्य ४०-४५)।

क) इस सबका परिणाम आदर है, जो सेवा के माध्यम से प्रभाव की ओर ले जाता है।

ख) मुख्य पद उत्प. ४१:३८ है। यहाँ तक कि दुनिया भी परमेश्वर को पहचानती है जब वह अपने लोगों के माध्यम से काम करता है।

ग) मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार यह है कि राष्ट्रों को प्रभावित करने और अपने नाम को महिमा देने के लिए परमेश्वर लोगों को सम्मान के पदों पर संप्रभुता से उठाता है।

टिप्पणियाँ

२. यूसुफ की मसीह जैसी आत्मा।

क. यूसुफ ने अपने भाइयों के पापों को क्षमा किया (अध्ययन करें उत्प. ४५:१-१५)।

१) उनके मन में पापियों के प्रति प्रेम और तरस था (पद्य २)।

२) उन्होंने पापियों का लाभ उठाने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने कड़वाहट दिखाए बिना क्षमा कर दिया और सब भूला दिला (पद्य ५)।

ख. यूसुफ ने अपने माता-पिता के प्रति भक्ति और आदर दिखाया (अध्ययन करें उत्प. ४६:२९)।

ग. यूसुफ ने बुराई के बदले भलाई दी (अध्ययन करें उत्प. ५०:१९-२१)।

१) उन्होंने पापियों पर दया, अनुग्रह, तरस और प्रेम दिखाया (पद्य २१)।

२) उन्होंने परमेश्वर की संप्रभुता को पहचाना और समझा कि परमेश्वर बुराई को अच्छाई में बदल देता है (पद्य १९, २०)।

क) इसका परिणाम यह हुआ कि यूसुफ को दूसरों के लिए आशीष बनने हेतु आशीष मिली (समीक्षा करें उत्प. १२:१-३)।

ख) मुख्य पद्य उत्प. ५०:२० है (उत्प. ४५:५; फिलि. १:१२; रोमि. ८:२८ भी देखें)।

ग) मुख्य धर्मवैज्ञानिक विचार यह है कि परमेश्वर दूसरों को आशीष देने के लिए अपने ही लोगों का उपयोग करते हैं।

च. उत्पत्ति का निष्कर्ष।

१. छुटकारे की योजना में दो सम्मिलित भाग: (दोबारा समीक्षा करें उत्प. १२:१-३):

क. आशीषित होना और दूसरों को आशीष देना।

ख. परमेश्वर को जानना और दूसरों को उसके विषय में बताना।

ग. विशेषाधिकार और जिम्मेदारी।

घ. प्रतिज्ञा और दायित्व।

टिप्पणियाँ

२. छुटकारे की योजना में इस्राएल से किए गए वादे सम्मिलित हैं ताकि वे राष्ट्रों को आशीष दे सकें।

क. परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करते हैं: परमेश्वर ने उन्हें भूमि और वंशज (बहुत से राष्ट्र) देने के अपने वादे को निरंतर दोहराया।

ख. परमेश्वर राष्ट्रों से प्रेम करते हैं:

१) अब्राहम ने सदोम के लिए मध्यस्थता की (उत्प. १८,१९)।

२) परमेश्वर ने इश्माएल के लिए बहुत रुचि और तरस दिखाया (उत्प. २१)।

३) याकूब की सीढ़ी का सपना दूसरों को सुसमाचार प्रचार करने से संबंधित प्रतीत होता है (उत्प. २८)।

४) परमेश्वर ने यूसुफ के द्वारा मिस्र को आशीष दी (उत्प. ५०:२०)।

३. छुटकारे की योजना में परमेश्वर का संप्रभुत्व चुनाव और कार्य सम्मिलित हैं।

क. परमेश्वर का संप्रभुत्व चुनाव पहले जन्मे के बढ़कर दूसरे जन्मे को प्राथमिकता देते हुए देखा जाता है।

१) कैन से बढ़कर शेत।

२) येपेत से बढ़कर शेम।

३) इश्माएल से बढ़कर इसहाक।

४) एसाव से बढ़कर याकूब।

५) अन्य भाइयों से बढ़कर यहूदा और यूसुफ।

६) मनश्शे से बढ़कर एप्रैम।

टिप्पणियाँ

ख. अंक सात (प्राचीन इब्रानियों के लिए सिद्धता का चिन्ह) के दोहराए जाने में परमेश्वर की संप्रभु गतिविधि देखी जाती है।

१) उत्प. १:१ में सात शब्द। (मूल इब्रानी)

२) उत्प. १:२ में ७x२ (१४) शब्द। (मूल इब्रानी)

३) सृष्टि के सात दिन।

४) बहुतायत के सात वर्ष।

५) अकाल के सात वर्ष।

६) नूह के पुत्रों के ७० वंशज।

७) याकूब के ७० वंशज।

IV. निर्गमन/गिनती/व्यवस्थाविवरण।

क. नए नियम के लिए एक सामान्य समानता।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें और इसका उपयोग इस चर्चा को बढ़ावा देने के लिए करें कि कैसे निर्गमन मसीह के जीवन की अंतिम घटनाओं के अनुरूप है।

पहले महीने की १४वें दिन (१२:६) से तीसरे महीने की पहले दिन (१९:१) तक ५० दिन है।

फसह (निर्ग. १२)	लाल सागर (निर्ग. १४)	सीनै = व्यवस्था दी गई (निर्ग. १९, २०)
⇕	⇕	⇕
कलवरी	पुन:उत्थान	पिन्तेकुस्त=पवित्र आत्मा दिया गया

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के दिन से लेकर पिन्तेकुस्त के दिन तक ठीक ५० दिन हैं।

टिप्पणियाँ

ख. मिलाप का तम्बू (अध्ययन करें निर्ग. २५-३०)।

१. मिलाप का तम्बू नए नियम की आत्मिक वास्तविकता के लिए पुराने नियम के भौतिक प्रकटीकरण का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि मसीह ने हमारे लिए किया है। मिलाप के तम्बू के सभी सात स्थान यीशु में पूर्ण होते हैं।

२. मिलाप के तम्बू के भीतर के स्थान।

क. एक बाहरी आंगन, जिसमें पीतल की वेदी और हौदी थी।

ख. पवित्र स्थान, जिसमें पवित्र रोटी की मेज, धूप की वेदी, और सोने का दीवट था।

ग. अति पवित्र स्थान, जिसमें वाचा का सन्दूक और अलग करनेवाला परदा था।

३. मिलाप के तम्बू के सात स्थान।

पुराना नियम I

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

मिलाप तम्बू के विषय में समझ और चर्चा को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें (इब्रानियों ९ और १० भी देखें)।

स्थान	कार्य	महत्व	यीशु से संबंध
पीतल की वेदी	पशु बलि के लिए प्रयुक्त	पश्चाताप; पापों के लिए भुगतान	यीशु का लहू
हौदी	सफाई और धुलाई के लिए उपयोग। लोग इस स्थान से आगे नहीं जा सकते थे (जैसे हम शुद्ध हुए बिना पवित्र परमेश्वर के पास नहीं जा सकते।)	सफाई	क्रूस (यूह.१३:७, ८; १५:२, ३)
पवित्र रोटी की मेज़	परमेश्वर की उपस्थिति और प्रावधान का प्रतिनिधित्व	परमेश्वर में भरोसा	यीशु हमारे प्रावधान हैं। हमारा भरोसा उन पर है।
धूप की वेदी	लोगों के लिए मध्यस्थता	प्रार्थना और क्षमा	यीशु धूप और मध्यस्थता की एक मीठी सुगंध हैं।
सोने का दीवट	परमेश्वर ज्योति का प्रतिनिधित्व	सेवकाई और सेवा-नियुक्त कार्य	यीशु, दुनिया की ज्योति।
परदा	परमेश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव को दर्शाता है। यह बैंगनी और लाल (शाही और खून) रंग का था। यह २८ फुट ऊँचा और ६ इंच मोटा था, फिर भी यह ऊपर से नीचे तक फट गया जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई (इतिहासकार जोसफस का कहना है कि यहूदियों ने जल्द इसे सिल दिया और इसका भूकंप पर दोष दे दिया।	सम्बन्ध संभव बना दिया गया	परदा मसीह की देह है (इब्रा. १०:१९, २०)। उनके क्रूस पर टूटने के द्वारा हम याजक के रूप में अति पवित्र-स्थान में प्रवेश कर सकते हैं।
वाचा का संदूक	उसमें परमेश्वर की उपस्थिति थी। याजक प्रत्येक वर्ष में केवल एक बार प्रवेश करते थे (हम अब मसीह में हैं और मसीह निरंतर अब हम में है)।	सम्बन्ध का एहसास हुआ	यीशु अब हम में है। हम वाचा के सन्दूक हैं। हम में मन्ना है (यूह. ६:३२-३५)। हम याजक हैं और महायाजक हम में रहते हैं (सन्दूक में हारून की छड़ी भी थी)।

टिप्पणियाँ

ग. वाचा के भीतर सामाजिक सरोकार।

१. लोगों के अधिकार। प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित और संरक्षित किया जाना चाहिए (निर्ग. २०:१३; व्यव. ५:१७; निर्ग. २१:१६-३१; लैव्य. १९:१४; व्यव. २४:७; २७:१८)।

२. झूठे आरोप के विरुद्ध सुरक्षा (निर्ग. २०:१६; २३:१-३; लैव्य. १९:१६; व्यव. ५:२०; ५:१५-२१)।

३. महिलाओं के साथ अन्याय नहीं किया जाना था (निर्ग. २१:७-११, २०; व्यव. २१:१०-१४)।

४. समान अधिकार:

क. सब्त के दिन (निर्ग. २०:८-११; २३:१२; व्यव. ५:१२-१५)।

ख. निष्पक्ष जाँच (निर्ग. २३:६, ८; लैव्य. १९:१५; व्यव. १:१७; १६:१८-२०; १९:१५-२१)।

ग. विरासत की सुरक्षा (गिन. २५:५-७; व्यव. २५:५-१०)।

घ. संपत्ति की सुरक्षा (व्यव. ५:१९; २२:१-४; निर्ग. २२:१-१५)।

ङ. नौकरी की सुरक्षा (लैव्य. १९:१३; व्यव. २४:१४; २५:४)।

५. जरूरतमंदों के साथ बाँटना (निर्ग. २३:,१११; व्यव. २४:१८, २४:१९-२१)।

६. जरूरतमंदों का शोषण नहीं किया जाना (निर्ग. २२:२१-२७; लैव्य. २५:३५, ३६; व्यव. २३:१९)।

७. जानवरों की देखभाल और सम्मान किया जाना चाहिए (निर्ग. २३:५,११; लैव्य. २५:७; व्यव. २२:४-७; २५:४)।

V. लैव्यव्यवस्था की किताब।

क. लैव्यव्यवस्था की सामान्य अवधारणाएँ।

१. किताब में आराधना के दौरान **पवित्रता** के लिए यहोवा सम्बंधित नियम हैं।

२. मुख्य शब्द **पवित्रता** है।

३. मुख्य अध्याय लैव्य. १६ है (प्रायश्चित **पवित्रता** की संभावना प्रदान करता है)।

४. मुख्य पद्य लैव्य. १९:२ (परमेश्वर पवित्रता का स्रोत है) है। इसी प्रगति के नए नियम के स्वरूप पर विचार करें (१ यूह. ४:१९)

ख. लैव्यव्यवस्था के भीतर विशिष्ट विषय।

१. लैव्यव्यवस्था में वर्णित बलिदान प्रणाली को समझाने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।[२]

नाम	जला भाग	अन्य भाग	प्रयुक्त पशु	बलिदान हेतु अवसर या कारण	गद्यांश
होमबलि	सारा	शून्य	दोष रहित नर या धन के अनुसार पशु	स्वेच्छा से आराधना का कार्य; सामान्य पाप के लिए प्रायश्चित जो परमेश्वर के प्रति समर्पण, प्रतिबद्धता और पूर्ण समर्पण को प्रदर्शित करता है	लैव्य. १
अन्नबलि	भाग की निशानी	याजकों द्वारा खाया जाना	अखमीरी रोटियाँ या अन्न नमकीन हो	आराधना का स्वैच्छिक कार्य; पहले फल के लिए धन्यवाद; परमेश्वर के प्रावधान और अच्छाई को मानना	लैव्य. २
मेलबलि	चर्बी वाला भाग	बाँटा जाना: याजक और और संगती में चढ़ाने वाला	धन अनुसार दोष रहित नर या मादा (स्वतंत्र भेंट में मामूली दोष की अनुमति है)	संगती (सांप्रदायिक भोजन सम्मिलित); अप्रत्याशित आशीष हेतु; किसी मन्नत से मुक्ति के लिए; सामान्य धन्यवाद हेतु	लैव्य. ३; २२:१८-२०
पापबलि	चर्बी वाला भाग	याजक द्वारा खाया जाना	याजक/लोग: बैल राजा: बकरा व्यक्ति: बकरी	ऐसी स्थिति जहाँ शुद्धिकरण की आवश्यकता हो; अनजाने में किया गया पाप जहाँ बहाली की कोई आवश्यकता नहीं; अनिवार्य	लैव्य. ४:१-५:१३
दोषबलि	चर्बी वाला भाग	याजक द्वारा खाया जाना	दोषरहित मेढ़ा	ऐसी स्थिति जहाँ उद्देश्य सहित अपराधबोध है और बहाली की आवश्यकता है; जब किसी पवित्र वस्तु का अनादर किया गया हो	लैव्य. ५-६:७

टिप्पणियाँ

२. पुराने नियम के पर्वों का सर्वेक्षण।

चर्चा विषय

पर्वों की निम्नलिखित सूची का अध्ययन करें और चर्चा करें: क्या किया जाता था? उनके क्या उद्देश्य थे?
वे नए नियम और मसीह के जीवन से कैसे संबंधित हैं?

- **फसह** (निर्ग. १२:१-१४; लैव्य. २३:५; गिन. ९:१-१४; २८:१६; व्यव. १६:१-७; और मत्ती २६:१७)।

- **अखमीरी रोटी** (निर्ग. १२:१५-२०; लैव्य. २३:६-८; गिन. २८:१७-२५; १ कुरिं. ५:६-८)।

- **पहले फल** (लैव्य. २३:९-१४; रोमि. ८:२३; १ कुरिं. १५:२०-२३)।

- **कटनी** (लैव्य. २३:१५-२१; गिन. २८:२६-३१; व्यव. ६:९-१२; प्रेरितों के काम २:१-४; १ कुरिं. ६:१५)।

- **तुरहियों** (लैव्य. २३:२३-२५; गिन. २९:१-६)।

- **प्रायश्चित का दिन** (लैव्य. १६; २३:२६-३२; गिन. २९:७-११; रोमि. ३:२४-२६; इब्रा. ९:७)।

- **तम्बुओं** (लैव्य. २३:३३-४३; गिन. २९:१२-३४; व्यव.१६:१३-१५; यूह. ७:२, ३७)।

- **महासभा** (लैव्य. २३:३६; गिन. २९:३५-३८)।

- **पुरीम** (एस्तेर ९:१८-३२)।

पुराना नियम: अंतिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

[१]जॉन री, रीजेंट यूनिवर्सिटी में थियोक्रेटिक नेशन कोर्स, १९८६.

[२]जॉन वाल्टन, पुराने नियम के कालानुक्रमिक और पृष्ठभूमि चार्ट। ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, १९७८.

पुराना नियम I

टिप्पणियाँ -